11

अब तक की बताई जाने वाली सर्वश्रेष्ठ कहानी से आगे

1965 में एक मोशन पिक्चर कज़्पनी ने मसीह के जीवन पर एक फिल्म प्रदर्शित की जिसका नाम *द ग्रेटैस्ट स्टोरी ऐवर टोल्ड* (अब तक की बताई जाने वाली सर्वश्रेष्ठ कहानी) रखा गया। फिल्म में मसीह के जन्म से आरज़्भ करके, पृथ्वी पर उसकी सेवकाई, ठुकराए जाने, क्रूसारोहण, गाड़े जाने और जी उठने को दिखाया गया। यद्यपि सिनेमा का उत्पाद यीशु के चित्रांकन के लिए पवित्र बाइबल में दर्ज बातों से मेल नहीं खाता था, परन्तु इसका शीर्षक स्मरण दिलाता है कि मसीह का वास्तविक जीवन अब तक की बताई गई सर्वश्रेष्ठ कहानी ही है।

यदि यीशु का जन्म, जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान अब तक की बताई जाने वाली सर्वश्रेष्ठ कहानी है, तो अब तक की बताई जाने वाली सर्वश्रेष्ठ कहानी से आगे क्या होगा? जब कोई नये नियम में प्रेरितों के काम की पुस्तक पढ़ता है तो उत्तर स्पष्ट हो जाता है: दूसरी अब तक की सर्वश्रेष्ठ कहानी है हमारे प्रभु की कलीसिया की स्थापना।

परमेश्वर के राज्य अर्थात कलीसिया को लाए जाने की कहानी, आशा के अनुरूप, आकर्षित करने वाली, बड़े साहस और रोमांच से भरी हुई है। प्रेरितों के काम की पुस्तक में अध्याय 2 में नाटक सदृश्य इस घटना का वर्णन है।

आइए प्रेरितों के काम की पुस्तक में इस अध्याय की यह मानकर समीक्षा करें कि जैसे यह एक अध्याय पूरी पुस्तक या एक सज़्पूर्ण कहानी हो। इस प्रकार हम कहानी को मज़बूत करने वाली और प्रेरणा से भरी हुई के रूप में विभाजित कर सकते हैं। इस पुस्तक में *अब तक की बताई जाने वाली सर्वश्रेष्ठ कहानी* का हर अध्याय कलीसिया की स्थापना की रोमांचकारी अवस्था को प्रस्तुत करेगा।

अध्याय एक: ''ईश्वरीय बहाव''

पुस्तक को आरज़्भ करते हुए हम पहला अध्याय खोलते हैं, जिसका शीर्षक है ''ईश्वरीय बहाव।''

प्रेरितों के काम के लेखक, लूका ने कहा ''जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे'' (2:1)। इसलिए कहानी की पृष्ठभूमि, पिन्तेकुस्त के दिन यरूशलेम का ऐतिहासिक नगर ही है। यशायाह (यशायाह 2:2-4) और मीका (मीका 4:1-3) ने अपनी भविष्यवाणियों में यरूशलेम को चिह्नित कर दिया था कि यही वह स्थान था जहां से, ''अन्त के दिनों'' के युग में यहोवा की व्यवस्था निकलनी थी। पिन्तेकुस्त पुराने नियम में यहूदियों के त्यौहार का दिन था, जिसे फसल की कटाई पर मनाया जाता था (निर्गमन 23:16)। पूरे रोमी साम्राज्य से, यहूदी पुरुष अपने परिवारों को लेकर पुराने नियम के इस त्यौहार को मनाने यरूशलेम आते थे।

पिन्तेकुस्त का दिन चढ़ते ही, कुछ असामान्य सी बात हुई:

> और एकाएक आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उससे सारा घर जहां वे बैठे थे, गूंज गया। और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं; और उन में से हर एक पर आ ठहरीं। और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य-अन्य भाषा बोलने लगे (प्रेरितों के काम 2:2-4)।

पवित्र आत्मा के बहाव को प्राप्त करने वाले केवल प्रेरित ही थे। प्रेरितों 2 और प्रेरितों 2 तक ले जाने वाले संदर्भ इसे स्पष्ट करते हैं। पहला, प्रेरितों 2:1 में ''वे'' का अर्थ प्रेरितों 1:26 में उल्लेखित ''ग्यारह प्रेरित'' ही हैं। कहानी के आरज़्भ होते ही प्रेरित ही मुज़्य आकर्षण बनते हैं। दूसरा, पवित्र आत्मा के आने का वृत्तांत (प्रेरितों 2:1-21) कहीं भी यह संकेत नहीं देता कि प्रेरितों के अलावा किसी और ने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया था। आत्मा के द्वारा प्रेरितों के भिन्न-भिन्न भाषाएं बोलने की गवाह भीड़ ने पहचाना और माना कि बोलने वाले केवल प्रेरित ही थे (प्रेरितों 2:7)।

पवित्र आत्मा के इस बहाए जाने से तीन वर्ष पूर्व, अलग-अलग परिस्थितियों में प्रेरितों के साथ वायदे किए गए थे कि कैसे मसीह एक दिन पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा। मसीह की सेवकाई के आरज़्भ में, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने कहा था, ''मैं

तो पानी से तुझें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूं, परन्तु जो मेरे बाद आने वाला है, वह मुझ से शक्तिशाली है; मैं उसकी जूती उठाने के योग्य नहीं, वह तुझें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा'' (मत्ती 3:11)। स्वर्ग में उठाए जाने से कुछ देर पहले, मसीह ने उन्हें कहा था, ''क्योंकि यूहन्ना ने तो पानी में बपतिस्मा दिया है परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे'' (प्रेरितों के काम 1:5)। ऊपर उठाए जाने से पहले अपने प्रेरितों को मसीह ने विदाई के शब्दों में निर्देश दिया कि वे जब तक पिता के वायदे को प्राप्त न कर लें और ऊपर से सामर्थ न पा लें, यरूशलेम में ही ठहरे रहें (लूका 24:46-49; प्रेरितों 1:4)। अब, पवित्र आत्मा के इस बहाए जाने में जो कि पिन्तेकुस्त के दिन सुबह के समय हुआ, प्रेरितों पर आत्मा के आने के सम्बन्ध में हमारे प्रभु के सभी वायदे पूरे हो रहे थे।

पवित्र आत्मा के स्वर्ग से बहाने पर, कुछ सुनाई दिया: ''और एकाएक आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ ...'' (प्रेरितों 2:2)। कुछ देखा भी गया: ''और उन्हें आग सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं; और उनमें से हर एक पर आ ठहरीं'' (प्रेरितों 2:3) कुछ अनुभव भी किया गया: जिस प्रकार लोगों ने आत्मा को आते देखा वह प्रेरितों द्वारा बोलियां, अर्थात भाषाएं बोलना था, जैसे आत्मा ने उन्हें सामर्थ दी। इसमें कोई संदेह नहीं कि प्रेरित उन लोगों की भाषा में बोल रहे थे जिन्होंने आंधी के जैसी आवाज़ सुनी थी और देखने के लिए इकट्ठा हुए थे कि वहां क्या हो रहा था। लोगों ने वह बोलने के लिए जो उन्होंने प्रेरितों से सुना था, यूनानी शब्द *डियालक्टोस* (जिसका अनुवाद ''भाषा'' है; प्रेरितों 2:6, 8) और गलोसेयस (अनुवाद ''जीभें''; प्रेरितों 2:11) का प्रयोग किया।

प्रेरितों को तीन ईश्वरीय उद्देश्यों के लिए पवित्र आत्मा से बपतिस्मा दिया गया था। पहला, उन्हें प्रेरणा देने के उद्देश्य से बपतिस्मा दिया गया था। पवित्र आत्मा ने उन्हें प्रेरणा दी ताकि वे संसार पर परमेश्वर के भेद को प्रकट कर सकें। मसीह ने प्रेरितों से वायदा किया था, ''परन्तु सहायक अर्थात पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुझें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैंने तुम से कहा है, वह सब तुझें स्मरण कराएगा'' (यूहन्ना 14:26)। अब पवित्र आत्मा के आने से, प्रेरणा देने का वह वायदा जो मसीह ने अपने प्रेरितों से किया था, पूरा होना था।

दूसरा, उन्हें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा यह पुष्टि करने के उद्देश्य से दिया गया कि जिस संदेश का उन्होंने प्रचार किया, वह परमेश्वर की ओर से था। जिन संदेशों का उन्होंने प्रचार करना था उनकी पुष्टि या उन्हें प्रमाणित करने के लिए पवित्र आत्मा के

द्वारा उन्हें चमत्कार करने, चिह्न दिखाने और अद्‌भुत कार्य करने की सामर्थ दी गई। मसीह ने वायदा किया था; ''और विश्वास करने वालों में ये चिह्न होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे और नई-नई भाषाएं बोलेंगे, सांपों को उठा लेंगे, और यदि वे नाशक वस्तु भी पी जाएं तौभी उनकी कुछ हानि न होगी, वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो जाएंगे'' (मरकुस 16:17, 18)। यह पुष्टि करने के लिए कि वे परमेश्वर की ओर से भेजे गये लोग हैं प्रेरितों के चमत्कारी कामों से पवित्र आत्मा के द्वारा यह वायदा पूरा होना था। इसके पूरा होने का एक उदाहरण प्रेरितों 14:3 में मिलता है ''और वे बहुत दिन तक वहां रहे, और प्रभु के भरोसे हियाव से बातें करते थे: और वह उनके हाथों से चिह्न और अद्‌भुत काम करवाकर अपने अनुग्रह के वचन पर गवाही देता था।''

तीसरा, प्रेरितों को पवित्र आत्मा से बपतिस्मा दिया गया ताकि उन्हें अन्य मसीहियों पर हाथ रखने की सामर्थ मिले और वे उन्हें चमत्कारी दान दे सकें। प्रेरितों 8:14-24 में सामर्थ को देने का उदाहरण है: दो प्रेरितों पतरस और यूहन्ना को, यरूशलेम से सामरिया को उन नये परिवर्तितों के लिए जो फिलिप्पुस के प्रचार से मसीह में आए थे प्रार्थना करने के लिए, उन पर हाथ रखने के लिए, और उन्हें पवित्र आत्मा के चमत्कारी दान देने के लिए भेजा गया।

''अब तक की बताई जाने वाली सर्वश्रेष्ठ कहानी'' के इस आरज़्भ का आपके और मेरे लिए क्या अर्थ है? इसका अर्थ है कि नये नियम में पाया जाने वाला प्रकाशन हमें आत्मा की प्रेरणा पाए लोगों से मिला। हम नये नियम के संदेश पर भरोसा रख सकते हैं कि यह सही है और इसमें कोई कमी नहीं है। परमेश्वर ने पवित्र आत्मा के बपतिस्मा देकर अपने प्रेरितों को सामर्थ दी; और प्रेरितों ने अपने हाथ रखकर अन्य मसीहियों को पवित्र आत्मा के चमत्कारी दान दिये। इस प्रकार नये नियम के सभी लेखकों को आत्मा की प्रेरणा थी, वे आत्मा की अगुआई में चलने वाले पुरुष थे। हम निश्चय के साथ विश्वास कर सकते हैं कि नया नियम मनुष्य के लिए परमेश्वर का प्रकाशन है।

अध्याय दो: ''सामर्थपूर्ण प्रवचन''

अब तक की बताई जाने वाली सर्वश्रेष्ठ कहानी के अध्याय दो का शीर्षक है ''सामर्थपूर्ण प्रवचन।'' जिस दिन कलीसिया की स्थापना हुई, वह दिन प्रचार का था।

पहले तो, स्पष्टत: सभी प्रेरितों ने अलग-अलग राष्ट्रीय समूहों से उनकी भाषा अर्थात बोली में ''परमेश्वर के बड़े-बड़े कामों की'' (प्रेरितों 2:11) घोषणा की। फिर पतरस उन ग्यारह लोगों के साथ खड़ा हुआ और उसने शायद यूनानी में बोलकर जो उस समय की विश्वव्यापी भाषा थी, विस्तृत प्रवचन देते हुए घोषणा की कि यीशु ही प्रभु और मसीह है (प्रेरितों 2:14)।

ज़ोर की आंधी की सी आवाज़ को सुनकर खिंचे आने वाले यहूदी थे, जिससे सुसमाचार के प्रथम प्रचार को असाधारण शक्ति वाले श्रोता मिल गए। उनमें बौद्धिक शक्ति थी। वे परमेश्वर में विश्वास रखते थे और पुराने नियम के शास्त्र को अच्छी तरह जानते थे। सुसमाचार संदेश को प्राप्त करने के लिए वे मानसिक रूप से तैयार थे। मसीह को कई देशों में ले जाने का भी उन्हें अवसर मिल गया। वे रोमी साम्राज्य के सभी क्षेत्रों से आए थे। जिन लोगों ने सुसमाचार को ग्रहण किया वे बाद में इसे लेकर अपने-अपने घरों को लौट गये थे, उनके सामने मसीहियत के सहज फैलाव का अवसर था।

आत्मा की प्रेरणा से, लूका ने हमारे लिए पतरस द्वारा प्रचार किए प्रवचन को संक्षेप में लिखा है (प्रेरितों 2:14-36)। पतरस के प्रवचन की महत्वपूर्ण समीक्षा दो या तीन ढंगों से हो सकती है; परन्तु आइए इसकी रूपरेखा इसके परिचय, मुज़्य भाग, और सारांश को ध्यान में रखकर विशेष भाषण के औपचारिक घटकों के अनुसार बनाएं।

पतरस ने अपने प्रवचन को प्रेरितों पर लगाए जाने वाले दोष का उत्तर देते हुए वहीं से आरज़्भ किया, जहां उसके सुनने वाले थे। कुछ लोगों ने ठट्ठे में कहा था ''वे तो नई मदिरा के नशे में हैं'' (प्रेरितों 2:13)। सुसमाचार के शिक्षकों के लिए आगे बढ़ने के लिए कुछ और हो या न हो परन्तु लोगों में उनका सज़्मान होना बहुत आवश्यक है। कोई भी शिक्षक जिसका विश्वसनीय चरित्र और विश्वसनीय नाम नहीं है, वह निश्चय ही बोलने से पहले ही असफल होता है। वह सुसमाचार को चाहे कितने भी शक्तिशाली ढंग से प्रस्तुत करे, उस पर न विश्वास होगा और न उसका आदर होगा।

फिर तो, कोई आश्चर्य नहीं कि पतरस ने इस दोष का उत्तर देते हुए यह प्रवचन आरज़्भ किया कि यह दोष प्रेरितों के विरुद्ध था। उसने तथ्यों के प्रति उनकी गलतफहमी का उत्तर दो सच्चाइयों से दिया: पहला, उसने बताया कि यह क्या नहीं था। उसने उनकी सहज बुद्धि की ओर ध्यान दिलाया। उसने कहा, ''जैसा तुम समझ रहे हो, ये नशे में नही हैं, क्योंकि अज़ी तो पहर ही दिन चढ़ा है'' (प्रेरितों 2:15)। पतरस कह

रहा था, ''वे शराबी नही हैं, क्योंकि पिन्तेकुस्त के जैसे महत्वपूर्ण दिन की इतनी सुबह ही कोई आम यहूदी पीयेगा नहीं। सहज बुद्धि आपको बताएगी कि हम शराबी नहीं हैं।'' दूसरा, पतरस ने समझाया कि यह क्या था। उसने बाइबल की ओर ध्यान दिलाते हुए कहा, ''परन्तु यह वह बात है, जो योएल भविष्यवक्ता के द्वारा कही गई थी'' (प्रेरितों 2:16)। फिर वह योएल 2:28-32 (प्रेरितों 2:17-21) को उद्धृत करने के लिए आगे बढ़ा। इस प्रकार कोई संदेह नहीं हो सकती कि पिन्तेकुस्त के दिन आत्मा का बहाया जाना, अन्त के दिनों के आरज़्भ के बारे में योएल की भविष्यवाणी का कम से कम आंशिक रूप में पूरा होना है। पतरस के शब्दों, कि ''यह वह बात है जो योएल भविष्यवक्ता के द्वारा कही गई है'' का इस प्रश्न के सज़्पूर्ण और अन्तिम उत्तर के रूप में सज़्मान होना चाहिए।

आत्मा के इस बहाये जाने से ''अन्त के दिनों'' का युग आरज़्भ हो गया। प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिलने से सामर्थ मिली, कलीसिया के चमत्कारी काल का आरज़्भ हुआ। बाद में प्रेरितों के काम की पुस्तक में प्रेरितों ने अन्य मसीहियों पर हाथ रखे, बेटे और बेटियों ने भविष्यवाणी की, जवानों ने दर्शन देखे, पुरनियों ने स्वप्न देखे, और दासों और दासियों ने भविष्यवाणियां कीं (प्रेरितों 6:6; 8:4-8, 14-24; 21:8, 9)। प्रेरितों पर आत्मा का यह बहाया जाना वह स्रोत था जिससे मसीहियत के आरज़्भिक दिनों का चमत्कारी चश्मा निकला। परमेश्वर ने आत्मा के चमत्कारी दान का प्रयोग, जो प्रेरितों के हाथ रखने से दिए जाते थे, शिशु कलीसिया की अगुआई करने के लिए तब तक किया जब तक नया नियम लिखित रूप में नहीं दिया गया था। नये नियम के लिखित रूप में पूरा होने, प्रेरितों की मृत्यु और उनकी मृत्यु जिन पर उन्होंने हाथ रखे थे, के साथ, कलीसिया का चमत्कारी आरज़्भ समाप्त हो गया और लिखित वचन के द्वारा कलीसिया की अगुआई करने का युग आरज़्भ हो गया।

फिर तो पतरस के परिचय ने भीड़ को संकेत दे दिया था कि यह घटना क्या नहीं थी और क्या थी। उसने उनकी सहज बुद्धि और शास्त्र की तरफ ध्यान दिलाया। वह अपने श्रोताओं को वहां ले गया जहां वे यीशु के मसीह होने के प्रमाण पर ध्यान देने को तैयार हो सके।

पतरस के प्रवचन के मुज़्य भाग में उन्हें यह विश्वास दिलाने के लिए कि यीशु ही मसीह है, अलग-अलग प्रमाण हैं। यदि आपको हज़ारों लोगों की सभा में खड़ा किया जाए और यीशु पर विश्वास रखने का प्रमाण मांगा जाए कि वह ही मसीह है तो आप क्या प्रमाण दोगे? आइए देखें उसने क्या प्रमाण दिये और उसके साथ अपनी बातों को

मिलाएं।

जब आवृत्ति निकाल दी जाती है, पतरस ने प्रमाण की पांच पंक्तियों की सूची दी और उनकी व्याख्या की। पहला, उसने *मसीह के चमत्कारों के प्रमाण* की ओर ध्यान दिलाया। उसने कहा, ''कि यीशु नासरी एक मनुष्य था जिसका परमेश्वर की ओर से होने का प्रमाण उन सामर्थ के कामों और आश्चर्य के कामों और चिह्नों से प्रकट है, जो परमेश्वर ने तुम्हारे बीच उसके द्वारा दिखलाए जिसे तुम आप ही जानते हो'' (प्रेरितों 2:22)। यह सामर्थ के कामों की गवाही ही थी, जिससे निकुदेमुस कायल हुआ कि मसीह परमेश्वर की ओर से आया था। मसीह के साथ रात को अपनी भेंट में, नीकुदेमुस ने कहा, ''हे रब्बी हम जानते हैं, कि तू परमेश्वर की ओर से गुरु होकर आया है; क्योंकि कोई इन चिह्नों को जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो, तो नहीं दिखा सकता'' (यूहन्ना 3:2)। यदि सम्पूर्ण और विश्वसनीय सूचना का स्रोत, एक विश्वसनीय दस्तावेज़ हो जिसका इन्कार न किया जा सकता हो, हमारे बीच घोषणा करे कि यीशु ने सचमुच चमत्कार किए, तो हम उस गवाही से विवश होंगे कि मसीह के चमत्कारों का उसी प्रकार उत्तर दें जैसे नीकुदेमुस ने दिया– हमें विश्वास करना ही पड़ेगा कि वह परमेश्वर की ओर से आया। परमेश्वर का वचन अर्थात बाइबल, जो इस पृथ्वी पर सबसे विश्वसनीय स्रोत है, गवाही देता है कि मसीह ने वास्तविक चमत्कार किये। यह प्रमाण हमें एक ही निष्कर्ष पर ले जा सकता है– वह परमेश्वर की ओर से ''स्वीकृत'' था, परमेश्वर के पुत्र के रूप में जो चमत्कार उसने किए, उनसे उसकी पुष्टि हुई। पतरस ने अपने श्रोताओं को मसीह के चमत्कार याद दिलाए और युक्तिसंगत निष्कर्ष निकालने के लिए पुकारा, जिसकी वह प्रमाण मांग करता है।

दूसरा, पतरस ने अपने श्रोताओं के सामने *जी उठने का प्रमाण* रखा। उसने कहा,

> उसी को, जब वह परमेश्वर की ठहराई हुई मनसा और होनहार के ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया, तो तुम ने अधर्मियों के हाथ से उसे क्रूस पर चढ़वाकर मार डाला, परन्तु उसी को परमेश्वर ने मृत्यु के बन्धनों से छुटकारा दिलाया: क्योंकि यह अनहोना था कि वह उसके वश में रहता (प्रेरितों 2:23, 24)।

पुनरुत्थान प्रेरितों के सारे प्रचार का महत्वपूर्ण भाग था। यह एक तर्क था, जिसका उत्तर यहूदी नहीं दे सकते थे। मसीह के पुनरुत्थान ने कायरों को साहसी पुरुष बना

दिया और साहसी पुरुषों को कायर बना दिया। यहूदी, जो निर्भीक होकर पीलातुस के आगे पुकारते थे कि, ''वह क्रूस पर चढ़ाया जाए!'' (मत्ती 27:22), खाली कब्र की सच्चाई के सामने भय से पीछे हट रहे थे। पतरस, जिसने मसीह की पेशी के समय डरते हुए कहा था, ''मैं उस मनुष्य को नहीं जानता'' (मत्ती 26:72), निडर होकर इतनी बड़ी सभा के सामने खाली कब्र से कुछ दूरी पर उसके जी उठने का प्रचार कर रहा था।

पुनरुत्थान से निर्णायक प्रमाण मिलता है कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है। मुर्दों में से उसके जी उठने का इन्कार करने के एक ही कारण से कोई मसीह के स्वर्ग से होने का इन्कार कर सकता है। पुनरुत्थान मसीहियत को अपने आप ही एक अलग श्रेणी में ले आता है। धर्मों की दुनिया में मसीहियत ही अकेला धर्म है जिसका संस्थापक मुर्दों में से जी उठा। यह उसके दावों की पुष्टि करता है, उसके वायदों को प्रामाणिक करता है, और उसके धर्म को दृढ़ करता है।

तीसरा, पतरस ने *भविष्यवाणी के प्रमाण* से तर्क दिया। उसने भजन संहिता 16:8-11 को उद्धृत किया जो कि मसीह के पुनरुत्थान की भविष्यवाणी थी।

> मैं प्रभु को सर्वदा अपने साम्हने देखता रहा क्योंकि वह मेरी दाहिनी ओर है, ताकि मैं डिग न जाऊं। इसी कारण मेरा मन आनन्द हुआ, और मेरी जीभ मगन हुई; वरन मेरा शरीर भी आशा में बसा रहेगा। क्योंकि तू मेरे प्राणों को अधोलोक में न छोड़ेगा; और न अपने पवित्र जन को सड़ने ही देगा । तू ने मुझे जीवन का मार्ग बताया है; तू मुझे अपने दर्शन के द्वारा आनन्द से भर देगा (प्रेरितों 2:25ख-28)।

अपनी भविष्यवाणी में, दाऊद ने प्रथम पुरुष की तरह बात की। धरातल पर यह लग सकता है कि वह अपने बारे में कह रहा था। पतरस ने दो तथ्यों की तरफ ध्यान दिलाकर दिखाया कि दाऊद अपने बारे में नहीं बोल सकता था। दाऊद, जिसने यह भविष्यवाणी की थी, मर गया था और गाड़ा गया था और अभी भी अपनी कब्र में था। अपने प्रमाण के लिए उसने दाऊद की कब्र की ओर इशारा किया, जो यरूशलेम में सबके देखने के लिए स्थित थी (प्रेरितों 2:29)। दूसरा, उसने उन्हें दाऊद को दिया परमेश्वर का वायदा याद दिलाया (प्रेरितों 2:30)। परमेश्वर ने दाऊद से वायदा किया था कि अन्ततः उसके वंशजों में से एक उसके सिंहासन पर बैठेगा (2 शमूएल 7:12)। पतरस ने कहा कि यह वायदा मसीह में पूरा हो चुका है, क्योंकि परमेश्वर ने उसे मुर्दों में से जिलाकर (प्रेरितों 2:31), उसे आत्मिक सिंहासन पर अपने दाहिने हाथ

बिठा दिया है। यीशु दाऊद के वंश के द्वारा संसार में आया और अब स्वर्ग में परमेश्वर के दाहिने हाथ आत्मिक सिंहासन पर बैठा है, राजा के जैसे ही वह अपने इस पृथ्वी के राज्य अर्थात कलीसिया पर राज कर रहा है।

पतरस ने अपने प्रवचन के अन्त में इससे मिलती-जुलती एक दलील भजन संहिता 110:1 की भविष्यवाणी से दी (प्रेरितों 2:34, 35)। भविष्यवाणी के उसके उल्लेख (भजन संहिता 16:8-11; 110:1) से प्रमाणित हुआ कि परमेश्वर की ओर से भेजे हुए को मुर्दों में से जी उठना था और उसे परमेश्वर के दाहिने हाथ महिमा मिलनी थी। यीशु ने, पुनरुत्थान और महिमा प्राप्त करके, स्पष्ट तौर पर पुराने नियम की इन दोनों भविष्यवाणियों को पूरा कर दिया था।

चौथा, पतरस ने *गवाहियों के प्रमाण* का प्रयोग किया। उसने कहा, इस यीशु को परमेश्वर ने जिलाया, जिसके हम सब गवाह हैं (प्रेरितों 2:32)। यहूदी यह मानने को बाध्य थे कि भविष्यवाणी जिसकी बात पतरस ने की थी, वह एक पुनरुत्थान की भविष्यवाणी थी। पतरस यह पुष्टि करना चाह रहा था कि मसीह मुर्दों में से जी उठा है और उसने भविष्यवाणी का वह भाग पूरा कर दिया है। उसने अपने श्रोताओं पर ज़ोर डाला कि प्रत्यक्षदर्शी की साक्षी को मानें कि यीशु मुर्दों में से जी उठा था। इस प्रकार की गवाही का प्रमाण बहुत उच्च दर्जे का होता है। कोई भी प्रामाणिक न्यायालय एक गवाह के प्रमाण को स्वीकार कर लेगा जब तक उसकी साक्षी के विरुद्ध कोई प्रमाण न हो। परमेश्वर ने अपने वचन में केवल अपने पुत्र के पुनरुत्थान की पुष्टि ही नहीं की, बल्कि उसने अपने वचन में गवाहों की साक्षी भी रखी जिन्होंने उसके मुर्दों में जी उठने के बाद, उसे देखा, उसे छुआ, उसके साथ खाया, व उसे जांचा था। ऐसी गवाहियों से इन्कार कौन कर सकता था।

पांचवां, पतरस ने *पवित्र आत्मा के उतरने के प्रमाण* की तरफ ध्यान दिलाया। उसने कहा, ''इस प्रकार परमेश्वर के दाहिने हाथ से सर्वोच्च पद पाकर और पिता से वह पवित्र आत्मा प्राप्त करके जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी, उसने यह उंडेल दिया है जो तुम देखते और सुनते हो'' (प्रेरितों 2:33)। स्वर्ग पर अपनी विदाई से कुछ देर पहले, मसीह ने पिता की प्रतिज्ञा को प्रेरितों पर भेजने का वायदा किया था। (लूका 24:46-49)। आत्मा के बहाये जाने के परिणामों को भीड़ देख और सुन चुकी थी। इस प्रकार उन्हें चमत्कारिक पुष्टि मिल गई थी कि यीशु पिता के दाहिने हाथ उठा लिया गया था। उसने पिता से आत्मा के वायदों को पा लिया था, और आत्मा को प्रेरितों पर भेज दिया था।

प्रमाण की इन पांच पक्तियों से एक निर्विवाद निष्कर्ष निकलता है। पतरस ने उनका ध्यान इस निष्कर्ष पर ''इस प्रकार'' शब्द से केन्द्रित किया। किसी ने कहा है, ''जब कभी आप नये नियम में ''इस प्रकार'' शब्द को देखो तो आपको रुक जाना चाहिए और देखना चाहिए कि यह *वहां* किस *लिए* है, क्योंकि इसके *वहां* होने *का कोई* कारण है।'' पतरस ने कहा, ''सो अब इस्राएल का सारा घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी'' (प्रेरितों 2:36)। उसके चमत्कार, उसका मुर्दों में से जी उठना, भविष्यवाणी को पूरा करना, गवाहियों की साक्षी, और आत्मा का उतरना प्रमाणित करते हैं कि यीशु ही परमेश्वर द्वारा प्रतिज्ञा किया हुआ, मसीह है, और वह ही प्रजु है।

अब तक की बताई जाने वाली सर्वश्रेष्ठ कहानी के इस अध्याय का हमारे लिए क्या अर्थ है? क्या यह हमें कायल करता है कि मसीहियत का केन्द्र मसीह है? जब कोई यह प्रमाणित करता है कि यीशु ही मसीह है, तो वह मसीहियत की प्रामाणिकता को प्रमाणित करता है। यदि पतरस यह प्रमाणित न कर सका होता कि मसीह ही परमेश्वर का पुत्र था जो हमारे पापों के लिए मर गया और मुर्दों में से जी उठा, तो मसीहियत अपने जन्म के दिन ही मर गई होती!

अध्याय तीन: ''गहराई की पुकार''

अब तक की बताई जाने वाली सर्वश्रेष्ठ कहानी के अध्याय तीन का शीर्षक है ''गहराई तक महसूस की गई पुकार।'' पतरस के श्रोताओं में से बहुत लोग उसके प्रवचन से प्रभावित हो गए थे। अपने विवेक पर हुए प्रहार से, वे पतरस और शेष प्रेरितों के सामने पुकार उठे।

लूका ने लिखा, ''तब सुनने वालों के हृदय छिद गये और वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे, कि हे भाइयो हम क्या करें?'' (प्रेरितों 2:37)। उनके हृदय का यह छिदना सूई से किसी की अंगुली के छिदने या कांटे से किसी के हाथ के छिदने के जैसा नहीं है। यह एक अभिव्यक्ति है जिसका अर्थ हृदय के टूटने के जैसा कुछ या जैसे किसी के दिल में से होकर तीर निकलते हैं। यही वाक्यांश प्रेरितों 7:54 में अलग संदर्भ में उपयोग किया गया है, ''ये बातें सुनकर वे जल गये, और उस पर दांत पीसने लगे।'' इस घटना में स्तिफनुस के प्रवचन से क्रोध में आए यहूदियों ने प्रतिक्रिया दी। उनके हृदय क्रोध से भर गये थे; वे घृणा से छिद गये थे। यहूदी, जिन्होंने पतरस के

प्रवचन का उत्तर दिया था, आरोप सिद्ध होने से बहुत प्रभावित तो हुए थे किन्तु साथ ही वे अपने दोष से व्याकुल भी थे।

हो सकता है कि जो लोग पुकार उठे उन्होंने वास्तव में पतरस के प्रवचन को बीच में ही रोका हो। रुकावट हमेशा अच्छी नहीं लगती परन्तु यह तो वास्तव में एक आशीषित रुकावट थी। एक बार जब प्रचारक प्रचार कर रहा था तो उसके प्रवचन में एक व्यक्ति ने यह प्रश्न पूछकर रुकावट डाली, ''क्या मैं अभी बपतिस्मा ले सकता हूं?'' प्रचारक रुक गया, उसने उस व्यक्ति की ओर टकटकी लगाकर देखा, और कहा, ''मेरा प्रवचन प्रतीक्षा कर सकता है। यदि तुम बपतिस्मा लेना चाहते हो, तो हम इस प्रवचन को रोक देंगे और तुझें मसीह में बपतिस्मा देंगे। मैं वापस आकर अपना प्रवचन पूरा कर लूंगा।'' इस प्रकार की रुकावट कोई अनुचित हस्तक्षेप नहीं, बल्कि एक प्रेरणा होगी।

उनका प्रश्न उत्सुकता से भरा था। उन्होंने लापरवाही से नहीं पूछा था, ''हम क्या करें?'' उनका प्रश्न कुछ इस प्रकार था, ''हम संसार में क्या कर सकते हैं? हम मुश्किल में हैं। क्या कोई आशा है?'' उनका प्रश्न पूरी गज़्भीरता में पूछा गया था।

उनके प्रश्न पर ध्यानपूर्वक विचार करें: ''हे भाइयो हम क्या करें?'' वे साथी यहूदियों को सज़्बोधित कर रहे थे, इसलिए ''भाइयो'' शब्द प्रयुक्त हुआ। इसका उपयोग राष्ट्रीय अर्थ में किया गया, धार्मिक में नहीं। उन्हें अहसास हो चुका था कि वे परमेश्वर के सामने भयानक स्थिति में थे। उन्होंने मसीह, अर्थात उद्धारकर्ता, जिसे परमेश्वर ने संसार में भेजा था, के क्रूसारोहण में भाग लिया था। पतरस के प्रवचन ने सुनने वालों के सामने उनका पाप मोटे-मोटे अक्षरों में रख दिया था (प्रेरितों 2:23)।

आपने अपने जीवन में अनेक महत्वपूर्ण प्रश्न पूछे और उनका उत्तर मिला, परन्तु क्या आपने नये नियम के अनुसार प्रश्न ''उद्धार पाने के लिए मैं क्या करूं?'' पूछा और उसका उत्तर दिया। दूसरे लोग जो पिन्तेकुस्त के दिन वहां उपस्थित थे, उन्होंने भी अवश्य ही पतरस का प्रवचन सुना और पिन्तेकुस्त के आश्चर्यकर्मों की गवाही दी परन्तु वे अपने दोष का सामना करने और यह प्रश्न पूछे बिना मुड़े और चले गये। किसी व्यक्ति के जीवन में पाप एक दुखांत है, इतना बड़ा दुखांत कि इसके प्रायश्चित (दाम) के लिए मसीह को इस संसार में आना पड़ा और क्रूस पर मरना पड़ा। इससे भी बड़ा दुखांत है। जब कोई परमेश्वर के सामने अपने दोष का सामना करने से इन्कार करता और उस दोष के लिए परमेश्वर द्वारा दिए हल का लाभ नहीं उठाना चाहता है, तो यह उसके लिए सबसे बड़ा दुखांत है।

अध्याय चार: ''आत्मा की प्रेरणा से उत्तर''

पुस्तक *अब तक की बताई जाने वाली सर्वश्रेष्ठ कहानी से आगे* चौथे अध्याय का शीर्षक है ''आत्मा की प्रेरणा से उत्तर।'' पवित्र आत्मा की अगुआई में अपने अपराध को मान चुकी भीड़ के प्रश्न का पतरस ने स्पष्ट उत्तर दिया: ''मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे'' (प्रेरितों 2:38)।

ऊपर उठाए जाने से कुछ देर पहले, हमारे प्रभु ने जो आज्ञा दी, उसे साधारण तौर पर ग्रेट कमीशन (अर्थात महान आज्ञा) कहा जाता है। इस आज्ञा के तीन पूरे वृत्तान्त नये नियम में दिये गये हैं: मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15, 16; और लूका 24:46, 47। हर वृत्तान्त में अलग ज़ोर दिया गया है। मरकुस 16:15, 16 विश्वास की स्थिति पर ज़ोर देता है। लूका 24:46, 47 मन फिराव और पापों की क्षमा पर बल देता है। मत्ती 28:18-20 बपतिस्मे के महत्व को बताता है। इन तीनों वृत्तान्तों से पता चलता है कि उद्धार अर्थात पापों की क्षमा विश्वास, मन फिराव, और बपतिस्मे की तीन शर्तों के साथ परमेश्वर की कृपा से दी जाती थी। महान आज्ञा के इन तीनों वृत्तान्तों के शब्दों में कोई शंका नहीं रहने दी गई कि इसे समझा न जा सके।

महान आज्ञा (ग्रेट कमीशन)में व्यक्त ये तीनों शर्तें उनके प्रश्न के लिए पतरस के उत्तर में देखी जा सकती हैं। पतरस के प्रवचन ने उनके हृदयों में मसीह पर विश्वास करना भर दिया था, और इस विश्वास के कारण वे व्याकुल होकर चिल्ला उठे। इसलिए यहूदियों के प्रश्न का पतरस का उत्तर विशेष रूप से ग्रेट कमीशन में मन फिराव और बपतिस्मे की दो अन्य शर्तों का उल्लेख करता है। उसने कहा, ''मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले;...'' (प्रेरितों 2:38)। ध्यान दें कि पतरस ने अपने उत्तर में पापों की क्षमा को क्या स्थान दिया। उसने उद्धार या पापों की क्षमा देने का वायदा बपतिस्मे से पहले नहीं, बल्कि इसके लेने के बाद में किया। पतरस को पवित्र आत्मा की अगुआई थी, और उसका यह उत्तर पवित्र आत्मा की ओर से था, उसका अपना नहीं।

जो पुकार उठे थे, उनको दिया उत्तर इतना स्पष्ट था कि उसके बारे में कोई गलतफहमी नहीं हो सकती थी। इस उत्तर की शक्ति और उसके प्रहार से बचने के लिए, कुछ धार्मिक शिक्षकों का कहना है कि प्रेरितों 2:38 में ''*for* (के लिए)'' का अनुवाद यूनानी शब्द से किया गया है जिसका अर्थ ''इन ऑर्डर टू'' नहीं बल्कि

''*because of* (अर्थात के कारण)'' है। बाइबल के असंख्य अनुवादों की तुलना करने पर यूनानी शब्द *eis* का अनुवाद ''के लिए'' या ''इन ऑर्डर टू'' मिलता है। उन्हें एक दूसरे के ऊपर ढेरी करें- उन सब में यूनानी शब्द *eis* ''फ़ॉर (के लिए),'' ''इन ऑर्डर टू'' या इससे मिलता-जुलता वाक्यांश ही मिलता है। किसी में भी यह शब्द ''के कारण'' नहीं मिलता। पतरस के उत्तर में स्पष्ट रूप से पापों की क्षमा बपतिस्मे के बाद बताई गई है। परमेश्वर के उत्तर को उसकी जगह रहने दें, और किसी को इसकी व्याख्या करने की अनुमति न दें।

किसी ने कहा है कि नये नियम में हर एक पद जुड़वां है। यह बात हमेशा सही नहीं होती है, परन्तु इसमें कुछ सच्चाई है। नये नियम के कुछ पद जुड़वां हैं। जब हम जुड़वां को देखते हैं तो हम उसी सच्चाई को और प्रकार से देखते हैं। प्रेरितों 2:38 का जुड़वां क्या है? इसका जुड़वां प्रेरितों 22:16 है। शाऊल इस प्रश्न के कि ''हे प्रभु मैं क्या करूं?'' (प्रेरितों 22:10क) का उत्तर ढूंढने के लिए दमिश्क में आया था। वह एक विश्वासी था, क्योंकि उसने प्रभु को देखा था, उसके साथ बात की थी और वह उसका कायल हो गया था। उसने प्रश्न में जो प्रभु से पूछा था, उसमें उसके मन फिराव की झलक थी। उसने तो प्रभु को स्वीकार ही कर लिया था, जैसे कि उसके प्रश्न से भी स्पष्ट है; परन्तु उसे दमिश्क जाने के लिए कहा गया ताकि उसे बताया जा सके कि उसे क्या करना है। वह प्रार्थना और मन फिराकर इस प्रश्न के उत्तर के लिए तीन दिन तक प्रतीक्षा करता रहा। हनन्याह को उत्तर देकर उसके पास भेजा गया। हनन्याह ने उसे क्या बताया? हनन्याह ने जो उत्तर उसे दिया, आप कह सकते हैं, कि वह प्रेरितों 2:38 का जुड़वां है। उसने कहा, ''अब देर क्यों करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल।'' यदि कोई शंका रह जाती है कि बपतिस्मा पापों की क्षमा के लिए है, तो प्रेरितों 22:16 इस प्रश्न पर सदा के लिए विराम लगा देती है।

एक युवक ने, जो एक प्राइवेट धार्मिक कॉलेज में जाता था, एक बार कहा कि उसका बाइबल प्राध्यापक बपतिस्मे को पापों की क्षमा के लिए नहीं मानता और यह शिक्षा वह अपनी कक्षा के विद्यार्थियों को भी देता है। किसी ने उससे पूछा, ''तूने उसके लिए क्या किया है?'' उसने कहा, ''मैंने अपनी मां से पूछा कि इसका क्या करूं, तो मेरी मां ने कहा कि मैं कक्षा के बाद प्राध्यापक के पास जाऊं और उसे प्रेरितों 2:38 की व्याख्या करने के लिए कहूं। मैंने ऐसा ही किया। मैंने बाइबल में से प्रेरितों 2:38 खोला, कक्षा के बाद उस प्राध्यापक के पास गया, और आदरपूर्वक उसे इसकी

व्याज़्या करने के लिए कहा। उसने कहा कि प्रेरितों 2:38 का वास्तविक अर्थ पापों की क्षमा 'के कारण' है न कि पापों की क्षमा 'के लिए।' मैं घर आया और जो कुछ उसने मुझे बताया था, उसका उल्लेख अपनी मां से किया, और फिर मां ने कहा कि मैं फिर प्राध्यापक के पास जाऊं और उसे प्रेरितों 22:16 की व्याज़्या करने के लिए कहूं। मैंने ऐसा ही किया। मैं कक्षा के बाद बाइबल लेकर प्राध्यापक के पास गया और प्रेरितों 22:16 खोलकर आदरपूर्वक उसे इस पद की व्याज़्या करने को कहा। जानते हैं कि प्राध्यापक ने क्या कहा? उसने कहा कि मैंने उस पद की व्याज़्या करने का यत्न नहीं किया बल्कि छलांग लगाकर उससे अगले पद पर चला जाता हूं।'' प्रेरितों 22:16 का स्पष्टीकरण नहीं दिया जा सकता। या तो इसे स्वीकार करना होगा या फिर रद्द।

पतरस ने संकेत दिया कि इस प्रश्न का जो उत्तर उसने दिया वह मानवीय इतिहास के इस अन्तिम काल अर्थात मसीही युग में परमेश्वर का उत्तर था। उसने कहा, ''क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुज़्हारी संतानों और उन सब दूर-दूर के लोगों के लिए ज़ी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा'' (प्रेरितों 2:39)।''तुम और तुज़्हारी संतानों'' यहूदियों को सज़्बोधित करने के लिए, जिन्होंने सुसमाचार का उत्तर दिया, और''उन सब दूर-दूर के'' अवश्य ही अन्यजातियों को शामिल करने के लिए अभिव्यक्ति है जिन्होंने समय बीतने पर सुसमाचार को सुनना, स्वीकार करना, और उसकी आज्ञा माननी थी।''जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा'' एक ऐसा वाक्यांश है जिसमें सभी यहूदी तथा अन्यजातियां सज़्मिलित होनी थीं जिन्होंने भविष्य में सुसमाचार को स्वीकार करके मसीह की ओर आना था। यदि वाक्यांश ''उन सब दूर-दूर के'' में अन्यजातियां शामिल नहीं हैं तो निश्चित ही वह पतरस के वाक्यांश ''जिनको'' में शामिल होंगे। पतरस ने पिन्तेकुस्त के दिन के लिए ही नहीं बल्कि मसीही युग के सभी भावी दिनों के लिए परमेश्वर की योजना की घोषणा की। उसने इस प्रश्न का कि ''उद्धार पाने के लिए मैं क्या करूं?'' परमेश्वर की ओर से उत्तर दिया।

अध्याय पांच: ''अद्‌भुत प्रतिक्रिया''

पुस्तक *अब तक की बताई जाने वाली सर्वश्रेष्ठ कहानी* के पांचवें अध्याय का शीर्षक है ''अद्‌भुत प्रतिक्रिया।'' उद्धार के सुसमाचार के संदेश के प्रथम प्रचार की आश्चर्यजनक स्वीकृति के बारे में लूका ने बताया। उसने कहा, ''सो जिन्होंने उसका

वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया; उसी दिन तीन हज़ार मनुष्यों के लगभग उनमें मिल गये'' (प्रेरितों 2:41)।

हमें यह नहीं बताया गया है कि उस सुबह पतरस और अन्य प्रेरितों ने कितनी देर तक प्रचार किया। लूका ने लिखा, ''उसने बहुत और बातों से भी गवाही दे देकर समझाया कि अपने आप को इस टेढ़ी पीढ़ी से बचाओ?'' (प्रेरितों 2:40)। पतरस ने उन्हें न केवल प्रमाण और दलील से कायल ही किया बल्कि उन्हें गवाही और ताड़ना से विवश भी किया।

पतरस का संदेश सुनने वालों ने उसे स्वीकार किया और उस पर अमल भी किया। लूका ने फिर गिनती की, ''सो जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया; उसी दिन तीन हज़ार मनुष्यों के लगभग उनमें मिल गये'' (प्रेरितों 2:41)। ये लोग वचन को सुनने वाले ही नहीं थे; अपितु उस पर चलने वाले थे (याकूब 1:25)। उन्होंने केवल इसे सुना ही नहीं; बल्कि इसके अनुसार जीने का निर्णय भी लिया। कितने दुख की बात है कि अधिकतर लोग वचन को केवल सुनते ही हैं। पतरस के प्रचार को सुनने वाली भीड़ में से कम से कम, कुछ ऐसे भी थे, जो उसके संदेश के कायल ही नहीं हुए बल्कि, उस संदेश को अपने मनों और जीवनों में ग्रहण करके वे मसीह में परिवर्तित हो गए।

तीन हज़ार लोगों ने आनन्द से वचन को ग्रहण किया और बपतिस्मा लिया। मन परिवर्तन होने से पहले, उद्धार के वचन को आनन्द से ग्रहण करना आवश्यक है। बहुतेरे लोगों के मसीह में न बदलने का एक मुज़्य कारण है कि लोग वचन को आनन्द से अपने हृदय में ग्रहण नहीं करते। यदि वचन को आनन्द से स्वीकारा जाए तो वचन सदा अपना काम करता रहेगा।

अध्याय छह: ''प्रतिज्ञा की हुई देह''

इस पुस्तक के छठे अध्याय का शीर्षक है ''प्रतिज्ञा की हुई देह।'' तीन हज़ार लोग, जिन्होंने मसीह में बपतिस्मा लिया था लूका ने उनकी तस्वीर कलीसिया के रूप में दिखाई गई है।

भविष्यवक्ताओं ने परमेश्वर के एक विलक्षण राज्य के आने की पूर्वसूचना दी थी (दानिय्येल 2:44)। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने, मसीहा के आने का मार्ग तैयार करते हुए, घोषणा की कि परमेश्वर का राज्य निकट है (मत्ती 3:1, 2)। अपनी

सेवकाई के समय स्वयं मसीह, परमेश्वर के भेजे हुए ने, मन फिराने के लिए कहा क्योंकि परमेश्वर का राज्य निकट था (मत्ती 4:17)। मृतकों में से जी उठने के बाद, अपने ऊपर उठाए जाने से पहले चालीस दिनों के समय में मसीह ने प्रेरितों और चेलों के साथ आने वाले राज्य के बारे में बातें कीं (प्रेरितों 1:3)। प्रेरितों को अपने अन्तिम शब्दों में मसीह ने बताया कि जो प्रतिज्ञा पिता ने की थी, वे उसकी प्रतीक्षा करें (प्रेरितों 1:4)। उसके ऊपर उठाए जाने के दस दिन बाद, एक रविवार सुबह, वह समय आ गया जिसकी बहुत देर से प्रतीक्षा थी। मसीह के जी उठने के बाद पवित्र आत्मा के बहाए जाने के साथ (प्रेरितों 2:1-4), सुसमाचार के पहले प्रचार (प्रेरितों 2:14-36), और तीन हज़ार लोगों द्वारा सुसमाचार का उत्तर दिए जाने से, कलीसिया का जन्म हुआ। सुसमाचार की आज्ञा को मानकर जो लोग मसीह के लहू में धोये गये थे, वे मसीह की कलीसिया बन गए। उस दिन से लेकर आज तक, जब भी कोई सुसमाचार को सुनता है और आनन्द से विश्वास करके मन फिराकर और यीशु को परमेश्वर का पुत्र मानकर अंगीकार करके मसीह में बपतिस्मा लेकर इसे मानता है, वह (प्रेरितों 2:47)- इन पहलों में, अर्थात आरज़्भ में पिन्तेकुस्त के दिन मसीह के पास आने वाले तीन हज़ार लोगों में, मिलाया जाता है।

पिन्तेकुस्त के बाद प्रेरितों के काम में, कलीसिया को वर्तमान और जीवित वास्तविकता के रूप में दिखाया गया है, न कि एक प्रतिज्ञा या भविष्यवाणी के रूप में। प्रेरितों 2 के अन्त में लूका ने कहा, ''...और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था'' (प्रेरितों 2:47)। प्रेरितों के काम की पुस्तक में दर्ज पतरस के दूसरे प्रवचन के अन्त में, लूका ने लिखा, ''परन्तु वचन के सुनने वालों में से बहुतों ने विश्वास किया; और उनकी गिनती पांच हज़ार पुरुषों के लगभग हो गई'' (प्रेरितों 4:4)। हनन्याह और सफीरा की मृत्यु के बाद (प्रेरितों 5:1-10), लूका ने लिखा, ''और सारी कलीसिया पर और इन बातों के सब सुनने वालों पर, बड़ा भय छा गया'' (प्रेरितों 5:11)। जब स्तिफनुस पर पथराव के बाद सताव बढ़ गया (प्रेरितों 6:8-7:60), तो लूका ने कहा, ''उसी दिन यरूशलेम की कलीसिया पर बड़ा उपद्रव होने लगा और प्रेरितों को छोड़ सबके सब यहूदिया और सामरिया में तितर-बितर हो गए'' (प्रेरितों 8:1)। फिर तो, लूका के अनुसार, कलीसिया अर्थात वह विलक्षण राज्य आ चुका था।

कहते हैं कि एक दिन मार्शल कीबल, जो कि एक महान सुसमाचार प्रचारक था, के पास कोई आया, और उसके हृदय की ओर इशारा करते हुए बोला, ''भाई कीबल

मुझे इसे महसूस करना अच्छा लगता है।'' भाई कीबल में अविस्मरणीय ढंग से उत्तर देने की आश्चर्यजनक योग्यता थी ...। बाइबल की ओर इशारा करते हुए उसने इस व्यक्ति को उत्तर दिया, ''हां, मुझे इसे पढ़ना अच्छा लगता है। मुझे इसे यहीं पढ़ना अच्छा लगता है।'' भावनाएं, निश्चित, ही महत्वपूर्ण हैं, परन्तु हमें उनके पीछे नहीं बहना चाहिए। हमारी अगुआई के लिए केवल बाइबल होनी चाहिए, जो परमेश्वर का वचन है। जब हमारी भावनाएं उसके वचन को सच्चे मन से स्वीकार करने और मानने पर आधारित होंगी, तो हमें वह सच्ची खुशी मिलेगी जो नये नियम में बताई गई है।

सारांश

पुस्तक *अब तक की बताई जाने वाली सर्वश्रेष्ठ कहानी* को हम बन्द करते हैं और जो कुछ हमने पढ़ा उसके बारे में सोचना आरज़्भ करते हैं। यह हम पर उजाला करती है कि हमने कुछ ऐसा सोचा है जिसका महत्व हमारे समाचार पत्रों या टेलीविज़न में पाये जाने वाले स्थानीय या राष्ट्रीय समाचारों में मिलने वाली किसी भी वस्तु से बढ़कर है। हम मूलत: पर्दे को पीछे खींचने के योग्य हो सके हैं जिससे अतीत को छिपाया है और हम आत्मा की प्रेरणा से दी गई प्रेरितों की पुस्तक के द्वारा, अति ऐतिहासिक और कलीसिया के वास्तविक आरज़्भ को देखते हैं, जो कि परमेश्वर का विलक्षण, चिर-प्रतीक्षित राज्य है। इसके आरज़्भ के साथ, हमने मानवीय इतिहास के अन्तिम युग अर्थात मसीही युग ''अन्त के दिनों'' की पहचान को देखा है।

इस पुस्तक के अलावा जो हमने पढ़ी एक और महत्वपूर्ण पुस्तक है। हम इसे *अब तक की बताई जाने वाली सर्वश्रेष्ठ कहानी का तीसरा भाग* कह सकते हैं। यह कहानी मसीह में आपके परिवर्तित होने की होगी, आपके उस कलीसिया के अंग बनने की कहानी, जिसे यीशु ने बनाया है। यह कहानी, निश्चय ही, हम में से हर एक के लिए भिन्न होगी, क्योंकि हम में से कइयों के लिए यह कहानी आसानी से लिखी जा सकती है, परन्तु कइयों के लिए यह कहानी कदापि नहीं लिखी जा सकती, क्योंकि उनके जीवन में यह कहानी घटी ही नहीं। आपको क्या लगता है? क्या आप पर यह कहानी घटी? क्या आप नये नियम के मसीही बन गये हैं?

यदि आप नये नियम के मसीही नहीं हैं, तो आप जानते हैं कि एक मसीही कैसे बनना है। सुसमाचार के वचन को आनन्द से ग्रहण करके और इसकी आज्ञा मानकर आप परमेश्वर के राज्य में, उसी स्वर्ग के राज्य में जिसे हमने प्रेरितों 2 में देखा है, जन्म

ले सकते हैं।

अध्ययन के लिए प्रश्न

(उत्तर पृष्ठ 238 पर)

1. किस अर्थ में हम कह सकते हैं कि कलीसिया की स्थापना अब तक बताई जाने वाली सर्वश्रेष्ठ कहानी से आगे की कहानी है?
2. आप क्या प्रमाण दे सकते हैं कि पिन्तेकुस्त के दिन केवल प्रेरितों को ही पवित्र आत्मा से बपतिस्मा दिया गया था?
3. उन ईश्वरीय कारणों पर विचार करें जिनसे प्रेरितों को पवित्र आत्मा से बपतिस्मा दिया गया?
4. आज हमारे लिए प्रेरितों के पवित्र आत्मा में बपतिस्मे का क्या अर्थ है?
5. मसीह के परमेश्वर की ओर से होने के उस प्रमाण पर विचार करें जो पतरस ने अपने प्रवचन में प्रस्तुत किया है।
6. परमेश्वर द्वारा मनुष्य के उद्धार की योजना में मसीह का पुनरुत्थान क्या महत्व रखता है? यदि मसीह मुर्दों में से जी न उठता तो क्या हम किसी भी प्रकार से उसे परमेश्वर का पुत्र मान सकते थे?
7. क्या आपको पाप में होने से बढ़कर कोई दुखांत लग सकता है?
8. उद्धार की स्थितियों पर महान आज्ञा के तीन वृत्तांतों के अलग-अलग महत्वों का वर्णन करें (मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15, 16; लूका 24:46, 47)।
9. वर्णन करें कि कैसे प्रेरितों 22:16, प्रेरितों 2:38 का समर्थन करती है।

शब्द सहायता

मन परिवर्तन - किसी के मन बदलने और एक मसीही बनने की क्रिया।

चमत्कारी काल - वह समय जब प्रेरित तथा अन्य जिन पर उन्होंने अपने हाथ रखे थे, आश्चर्यकर्म कर सकते थे। यह कलीसिया के शैशवकाल का समय था। यद्यपि परमेश्वर अब भी प्रार्थनाओं का उत्तर देता है, परन्तु चमत्कारी काल अन्तिम प्रेरित की मृत्यु के साथ समाप्त हो गया (इफिसियों 4:11-13; 1 कुरिन्थियों 13:8-10)।

नीकुदेमुस – एक शिक्षक जो यीशु के पास रात के समय आया। यीशु ने उसे बताया कि परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कैसे करना है (यूहन्ना 3)।

प्रकाशन – पवित्र आत्मा के द्वारा प्रकट किए गए अथवा बताए गए सत्य। मनुष्य के लिए परमेश्वर का प्रकाशन बाइबल है।